

༄༅། བོད་ཀྱི་ནང་བསྟན་དཔེ་ཚོགས་ལྷན་ཁག་།

Tibetan Buddhist Resource Center

Text Scan Input Form - Title Page

Work:	W30197	ImageGroup:	I1KG9854
LCCN:	n/a	ISBN:	n/a

Title:	དྲི་མེད་འོད་ཀྱི་རྒྱུན། dri med 'od kyi rgyan/
Author:	ནོར་བཟང་རྒྱ་མཚོ། nor bzang rgya mtsho
Descriptor:	reproduced from an ancient print from gemur monastery in lahul
Original Publication:	n/a;n/a
Place:	delhi
Publisher:	topden tshering
Date:	1975
Volume:	1
Total Volumes:	1
TBRC Pages:	2
Introductory Pages:	n/a
Text Pages:	n/a
Scanning Information:	Scanned at Tibetan Buddhist Resource Center, 150 West 17th St, New York City, NY 10011, US. Comments: 6/2011

W30197

42

DRI MED 'OD KYI RGYAN
MKHAS-GRUB NOR-BZAN-RGYA MTSHO

PHYI NAN GZAN GSUM GSAL BAR BYED PA DRI MED 'OD KYI RGYAN

A detailed exegesis of the Kalacakra Tantra

by

Mkhas-grub Nor-bzan-rgya-mtsho

Reproduced from an ancient print from Gemur Monastery in Lahul

by

Topden Tshering

DISTRIBUTOR

TIBETAN BONPO MONASTIC CENTRE

Dolanji, P.O. Ochghat (via Solan)

H. P.

1975

Published by Topden Tshering

and

Printed at the M. M. Offset Press, Ballimaran, Delhi-6

Price: Rs. 300/—

PREFACE

The famed Tibetan Lamaist astrologer and astronomer (**rtsis-pa**) **Mkhas-grub Nor-bzan-rgya-mtsho** (1423-1513) is most famed for his treatment of Tibetan **rtsis** presented in the *Pad dkar zal lun* which he co-authored with **Phug-pa Lhun-grub-rgya-mtsho**. In the present work he presents a detailed and lucid study on the Kalacakra Tantra in which he discusses the chronological and astrological principles of the famed tantra which is the basis of all Tibetan **rtsis**. The Phug lugs of **rtsis** was the fundamental theory upon which the great **Sde-srid Sans-rgyas-rgya-mtsho** wrote his *Vaidurya dkar po*.

This work was begun at the behest of the **Chos-rgyal Nan-so Rdo-rje-tshe-brtan** at **Ri-bo-bde-chen** and completed at **Bkra-sis-sten-kha**. The blocks would seem to have been carved at the behest of the 5th Dalai Lama. The print comes from the **Dge-mur Monastery** in **Lahul** and is quite unclear and consequently had to be traced.

༡། རྩིན་པ་ཁོན་གསུམ་གསལ་པར་བྱེད་པ་རྩི་མེད་འོད་ཀྱི་རྒྱུ་ཅེས་ཕུག་
མཁས་ཀྱི་བོད་པ་བྱང་ཆུ་མཚས་མཛད་པ་བཞུགས་པོ།

卷之五

[illegible]

[illegible]

一、關於「中國」的定義
 二、關於「中國」的範圍
 三、關於「中國」的主權
 四、關於「中國」的領土
 五、關於「中國」的人口
 六、關於「中國」的經濟
 七、關於「中國」的文化
 八、關於「中國」的政治
 九、關於「中國」的法律
 十、關於「中國」的教育
 十一、關於「中國」的宗教
 十二、關於「中國」的藝術
 十三、關於「中國」的科學
 十四、關於「中國」的歷史
 十五、關於「中國」的地理
 十六、關於「中國」的民族
 十七、關於「中國」的語言
 十八、關於「中國」的習俗
 十九、關於「中國」的風氣
 二十、關於「中國」的命運



[illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
सर्वं कर्म यत्तु योऽपि कुरुते ॥

[The text in this block is extremely faint and largely illegible due to fading or damage.]

[illegible]

[The following text is extremely faint and illegible due to extreme blurriness.]



[The following text is extremely faint and largely illegible due to fading and bleed-through from the reverse side. It appears to be a continuation of the Sanskrit manuscript.]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

大正

卷之四

[illegible]

[illegible]



1854

[illegible]

卷之四

卷四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[The following text is extremely faint and largely illegible due to fading and bleed-through from the reverse side. It appears to contain several lines of handwritten script.]

(The following text is extremely faint and largely illegible due to fading or bleed-through from the reverse side of the page.)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टमोऽध्यायः ॥ १ ॥
अथ भगवत्पुनरुवाच ॥ अहं भवामि कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ॥
ममैवमाद्युतं कुरुष्व धर्मं संजय ॥ २ ॥
संजय उवाच ॥ दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रो पाण्डुपुत्रो वीर्यवान् ॥
उवाच ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

[illegible]

三

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

५३
५४
५५

॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

[illegible]

अथर्ववेदः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

५५७७ ७५७७

[illegible]

[illegible]



卷之四

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । इति श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अर्जुनस्य वचनम् ॥
 अथ कुरुक्षेत्रे युद्धे अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदमुनिप्रिय ! त्वत्पुत्रस्तथा
 भीमार्जुनसमा युधि । युतैश्चात्मजा बलवानाम्भारता ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता संजनाः ॥ सँश्रितः पाण्डवः शूरा महेष्वाहा ॥
 कौरवस्य च महिषी ॥ १ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः अष्टाध्याये प्रथमोऽध्यायः ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

५५५५

五

[illegible]

[illegible]

पुस्तक
पुस्तक
पुस्तक

॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥



三

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]



五

[illegible]

[illegible]

[illegible]

新

22

[illegible]

[illegible]

卷一

五

[illegible]

花邊

卷之五

[illegible]

25



[illegible]

[illegible]

卷之五

[illegible]

22

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之四

五

[illegible]

25

五

[illegible]

रुद्राक्ष
रुद्राक्ष

[illegible]

[illegible]

[The following text is extremely faint and largely illegible due to fading or bleed-through from another page.]

[illegible][illegible]

[illegible]

卷之四

19

[illegible]

[illegible]



七

[illegible]

一

५५३

[illegible]



517

[illegible]

23

[illegible]

五

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之六

27

॥ २० ॥
 ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

[illegible]

काशी

[illegible]

[illegible]

29

年

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible]

[The following text is extremely faint and largely illegible due to extreme blur and low contrast. It appears to be handwritten notes or bleed-through from another page.]

[illegible]

अथवा

[The following text is extremely faint and largely illegible due to extreme blurring and low contrast. It appears to contain multiple lines of handwritten Devanagari script.]

[illegible]

大德堂

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

蘇子瞻

[illegible]

सुखं सुखं सुखं

[illegible]

卷之四

[illegible]

五言古詩

[illegible]

[illegible]

五言古詩

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीकृष्णार्जुनसंवासे अष्टाध्यायी नाम प्रथमोऽध्यायः ॥
 ॐ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पांडवश्चैतानि महाबाहो नमस्कृत्य ॥
 वीक्ष्य द्रुपद उवाच ॥ १ ॥ ॐ द्रोणे पाण्डवस्य शूराग्रज ॥ त्वं ह्यर्जुनाय विप्रमुपासीत ॥
 ॐ पाण्डवस्य शूराग्रज ॥ त्वं ह्यर्जुनाय विप्रमुपासीत ॥ २ ॥ ॐ पाण्डवस्य शूराग्रज ॥ त्वं ह्यर्जुनाय विप्रमुपासीत ॥
 ॐ पाण्डवस्य शूराग्रज ॥ त्वं ह्यर्जुनाय विप्रमुपासीत ॥ ३ ॥ ॐ पाण्डवस्य शूराग्रज ॥ त्वं ह्यर्जुनाय विप्रमुपासीत ॥
 ॐ पाण्डवस्य शूराग्रज ॥ त्वं ह्यर्जुनाय विप्रमुपासीत ॥ ४ ॥ ॐ पाण्डवस्य शूराग्रज ॥ त्वं ह्यर्जुनाय विप्रमुपासीत ॥
 ॐ पाण्डवस्य शूराग्रज ॥ त्वं ह्यर्जुनाय विप्रमुपासीत ॥ ५ ॥ ॐ पाण्डवस्य शूराग्रज ॥ त्वं ह्यर्जुनाय विप्रमुपासीत ॥
 ॐ पाण्डवस्य शूराग्रज ॥ त्वं ह्यर्जुनाय विप्रमुपासीत ॥ ६ ॥ ॐ पाण्डवस्य शूराग्रज ॥ त्वं ह्यर्जुनाय विप्रमुपासीत ॥
 ॐ पाण्डवस्य शूराग्रज ॥ त्वं ह्यर्जुनाय विप्रमुपासीत ॥ ७ ॥ ॐ पाण्डवस्य शूराग्रज ॥ त्वं ह्यर्जुनाय विप्रमुपासीत ॥
 ॐ पाण्डवस्य शूराग्रज ॥ त्वं ह्यर्जुनाय विप्रमुपासीत ॥ ८ ॥ ॐ पाण्डवस्य शूराग्रज ॥ त्वं ह्यर्जुनाय विप्रमुपासीत ॥
 ॐ पाण्डवस्य शूराग्रज ॥ त्वं ह्यर्जुनाय विप्रमुपासीत ॥ ९ ॥ ॐ पाण्डवस्य शूराग्रज ॥ त्वं ह्यर्जुनाय विप्रमुपासीत ॥
 ॐ पाण्डवस्य शूराग्रज ॥ त्वं ह्यर्जुनाय विप्रमुपासीत ॥ १० ॥ ॐ पाण्डवस्य शूराग्रज ॥ त्वं ह्यर्जुनाय विप्रमुपासीत ॥

卷之五

[illegible]

卷之五

[illegible]

[illegible]

ॐ । एतन्मन्त्रं ध्यात्वा सर्वपापं क्षमायामाह । एतन्मन्त्रं ध्यात्वा सर्वपापं क्षमायामाह । एतन्मन्त्रं ध्यात्वा सर्वपापं क्षमायामाह । एतन्मन्त्रं ध्यात्वा सर्वपापं क्षमायामाह ।

[illegible]

卷之四

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

五

291

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

五

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

वृत्तः

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

蘇武傳

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

五
四
三

[illegible]

[illegible]

संस्कृत-सहित-संस्कृत

[illegible]

[illegible]

राम कृष्ण

[illegible]

卷之五

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[The text in this image is extremely faint and illegible due to low contrast and blurring. It appears to be a dense block of handwritten script, possibly Devanagari or a similar Indic script.]

[illegible]



卷一

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(The following text is extremely faint and mostly illegible due to extreme blur and low contrast.)

[illegible]

五
四
三
二
一

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

所遺 田 五畝

[illegible]

[illegible]

३३७
 ३३८
 ३३९
 ३४०
 ३४१
 ३४२
 ३४३
 ३४४
 ३४५
 ३४६
 ३४७
 ३४८
 ३४९
 ३५०
 ३५१
 ३५२
 ३५३
 ३५४
 ३५५
 ३५६
 ३५७
 ३५८
 ३५९
 ३६०
 ३६१
 ३६२
 ३६३
 ३६४
 ३६५
 ३६६
 ३६७
 ३६८
 ३६९
 ३७०
 ३७१
 ३७२
 ३७३
 ३७४
 ३७५
 ३७६
 ३७७
 ३७८
 ३७९
 ३८०
 ३८१
 ३८२
 ३८३
 ३८४
 ३८५
 ३८६
 ३८७
 ३८८
 ३८९
 ३९०
 ३९१
 ३९२
 ३९३
 ३९४
 ३९५
 ३९६
 ३९७
 ३९८
 ३९९
 ४००

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पुस्तक संख्या

[illegible]

[illegible]

卷之六

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

卷之六

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

विष्णु

[illegible]

सिद्धि मन्त्र

[illegible]

[illegible]

水
金
龍

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

五言古詩

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

花邊

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

五言古詩

[illegible]

[illegible]

卷之五

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

222

[illegible]

[illegible]

१५५५

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

新嘉坡

[illegible]

[illegible]

विष्णु चोक्तम्

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之五

[illegible]

[illegible]

大正九年

25

[illegible]

[illegible]

27

2

पञ्चमः

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

१५६५

[illegible]

[illegible]

2552 2553

19

[illegible]

सिद्धि सुखादि

(The following text is extremely faint and largely illegible due to extreme blur and low contrast.)

[illegible]

२५५५

[illegible]

[illegible]

五九六

[illegible]

[illegible]

225

[illegible]

[illegible]

विष्णु भक्त

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

५५५

[The following text is extremely faint and largely illegible due to extreme blurring. It appears to consist of several lines of handwritten script.]

[illegible]

सुखदुःख

[illegible]

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

५५५ ५५५ ५५५

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सुखदुःख

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

29
28
27
26
25

[illegible]

[illegible]

卷之五

[illegible]

[illegible]

22 22 22 22

[illegible]

[illegible]

何處有

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

১৯২৭

[illegible]

484

செவ்வாய்

[illegible]

[illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

卷之四



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टाध्याय्योऽष्टमोऽध्यायः ॥ १ ॥

199

[illegible]

सुदक्ष भैरवकृत रत्नाकर

[illegible]

[illegible]

大德五年

[illegible]

[illegible]

卷之五

[illegible]

[illegible]

卷之五

[illegible]

[The following text is extremely faint and largely illegible due to extreme blur and low contrast. It appears to be handwritten Devanagari script.]

花邊草

[illegible]

[illegible]

新編 卷之五

[illegible]

[illegible]

五言古詩

[illegible]

[illegible]

花邊草

[illegible]

[illegible]

卷之五

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

520

[illegible]

सिद्धि विधायाः

[illegible]

[illegible]

[The text in this block is extremely faint and illegible due to extreme blurring and low contrast. It appears to be a dense block of handwritten or printed text.]

[The text in this image is extremely faint and illegible due to extreme blur or fading.]

[The following text is extremely faint and largely illegible due to extreme blur and low contrast.]

[illegible]

卷之五

3

[illegible]

[The following text is extremely faint and largely illegible due to extreme blur and low contrast. It appears to be handwritten Devanagari script.]

[illegible]

齊東野語

[The text in this block is extremely faint and illegible due to extreme blurring. It appears to consist of several lines of handwritten script.]

[illegible]

行通海

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

行遊學

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之五

[illegible]

[illegible]

[illegible]

रुद्राक्ष रुद्राक्ष रुद्राक्ष

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

卷之四

129

॥५५३५॥

[illegible][illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible]

[illegible]

卷之五

[illegible]

[illegible]

大德無疆

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible]

[The following text is extremely faint and largely illegible due to extreme blurring and low contrast.]

[illegible]

[illegible]

मन्त्र के पाठ्य आदि

[illegible]

[illegible]

संस्कृत-संस्कृत-संस्कृत

[illegible]

[illegible]

१५५५

[illegible]

[illegible]

विष्णु विष्णु विष्णु

[illegible]

[illegible]

蘇軾

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

卷之五

[illegible]

[illegible]

卷之四
 四
 四

[illegible]

[illegible]

रुद्रकुल ईश्वरकृत रत्नसुभाष

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible]

[illegible]

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

१०५

[illegible]

[illegible]

張敬之

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之五

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

五言古詩

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

芥子園畫傳

[illegible]

[illegible]

花邊

卷四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

不盡
卷四
終

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः ॥ १ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

